सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास
   - a. भाषायी कौशलों का विकास
   - b. भाषायी कौशलों का महत्व
   - c. भाषा के कौशल
   - d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन
   - e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग
   - f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल
   - g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास
   - a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल
   - b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर
   - c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर
   - d. वाचन शिक्षण की विधियाँ
   - e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें
   - f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास
   - a. लेखन कौशल
   - b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता
   - c. लेखन कौशल का महत्व
   - d. लेखन शिक्षण का समय
   - e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा
   - f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ
   - g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर

क्र. सं.	सस्वर वाचन	मौन वाचन
1.	यह बोलकर किया जाता है।	यह चुपचाप वाचन किया जाता है।
2.	इसमें कक्षा का वातावरण स्वरमय हो जाता है।	इसमें कक्षा का वातावरण शान्तिमय होता है।
3.	इसे उच्चारण शुद्धि के लिए किया जाता है।	इसमें विषयवस्तु ग्रहण के लिए किया जाता है।
4.	यह छोटी कक्षाओं 4, 5, 6, 7, 8 में उपयोगी है।	यह उच्च कक्षाओं 9, 10, 11, 12 में उपयोगी है।
5.	इसमें ध्यानपूर्वक सुनना आवश्यक है।	इसमें गहन विचारों को समझना आवश्यक है।
6.	इसमें उच्चारण से अर्थग्रहण होता है।	इसमें बिना उच्चारण अर्थग्रहण होता है।
7.	इसमें पढ़ने व समझने की गति न्यूनतम होती है।	इसमें समझने की तीव्र गति होती है।
8.	इसमें बालक कम सीख पाता है।	इसमें बालक अधिक सीखता है।
9.	इसमें स्थूल व सूक्ष्म अध्ययन सम्भव है।	इसमें सूक्ष्म व व्यापक अध्ययन सम्भव है।

Scanned with CamScanner